सहनशक्ति का पाठ पढ़ लो तो बाकी सब शक्तियाँ स्वतः आ जायेंगी

आज अमृतवेले जब आप सबका यादप्यार लेकर बाबा के पास पहुँची, तो बाबा सामने ही खड़े थे और दृष्टि द्वारा मिलन मना रहे थे। जैसे मैं आगे बढ़ती गई वैसे क्या देखा कि मेरे पीछे-पीछे और भी आ रहे हैं। तो जैसे ही हम बाबा के पास पहुँची तो और भी अनेक भाई-बहिनें हमारे साथ-साथ वतन में पहुँच गये, और सभी ऑटोमेटिक त्रिशूल की डिजाइन में खड़े हो गये, और जो त्रिशूल के बीच में थोड़ा ऊंचा होता है, वहाँ पर बाबा हमें साथ लेकर खड़े हो सबको दृष्टि देने लगे। बाबा के हाथ में बहुत चमकदार हीरों के सुन्दर तिलक थे, जो बाबा ने सभी पर ऐसे फेंके जो हर एक के मस्तक पर ∩ के आकार में ऑटोमेटिक लगते गये। बाबा को लगाने की आवश्यकता नहीं थी। फिर दादी जानकी, जयन्ती बहन और जो भी मुख्य बहिनें हैं उन सबको बाबा ने इमर्ज करके अपने साथ खड़ा किया और कहा कि देखो यह सब मेरे विजयी रत्न हैं। मैंने कहा बाबा आज आपने किन्हों को इमर्ज किया, हम तो सबको पहचान नहीं सकी। तो बाबा ने कहा जो भी विदेश में सेवाकेन्द्र, गीता पाठशाला हैं उनके निमित्त एक-एक रत्न को विशेष आज वतन में इमर्ज किया है। बाबा ने कहा – देखो यह संगठन कितना प्यारा है। फिर एक सेकण्ड में वो जो त्रिशूल बना हुआ था वो सभी ऐसे मिल करके बाबा की बाँहों में आ गया, जैसे सभी के गले में बाबा की बाँहों का हार पड़ गया। बाबा की बाँहें बहुत लम्बी-लम्बी, बड़ी-बड़ी होती गई और सभी के गले में वो हार पड़ता गया। फिर यह सीन पूरा हो गया। जो इमर्ज

थे वो मर्ज हो गये और मैं अपने को बाबा के पास देखने लगी। तो बाबा ने मेरे से पूछा – बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा बाबा आपके पास तो सब पहले ही पहुँच जाता है। फिर भी बाबा ने कहा तुम अपनी ड्युटी बजाओ। तो हमने सुनाया कि बाबा आज ग्लोबल हाउस के साथ जो स्थान मिल रहा है, उसमें फाउण्डेशन डालना है अथवा पाँव घुमाना है, उसके प्रति ही आये हैं। तो बाबा ने जैसे उसी सेकण्ड उस स्थान को वतन में इमर्ज कर दिया और बाबा जैसे ऊपर किसी स्थान पर खड़े हो गये, साथ में हम भी थी तो बाबा ऊपर से चारों तरफ घूमते हुए दृष्टि दे रहे थे।

फिर बाबा ने कहा कि लण्डन अथवा यू.के. निवासी और उनके जो भी साथी हैं, सबको बाबा मुबारक के साथ वरदान देते हैं, हिम्मत बहुत अच्छी है। कोई भी प्लैन बनता है तो सोचते नहीं हैं कि क्या होगा, कैसे होगा ? क्या, क्यों का भाषण नहीं करते हैं लेकिन हिम्मत रखते हैं और सबके दिल से निकलता है ''हाँ जी।'' तो जहाँ हाँ जी, हाँ जी है वहाँ हजूर भी हाजिर हो जाता है और बाबा के घर वा स्थान भी सहज ही बन जाते हैं और सेवा भी चालू हो जाती है। अभी तक कोई ऐसा स्थान नहीं है, जो ऐसे ही खाली पड़ा हो, सेवा नहीं चल रही हो। यह भी एक वरदान है जो हिम्मत से सबके दिलों में हजूर हाजिर हो जाता है इसलिए सफलता बहुत सहज है। मेहमानों की भी सेवा बहुत अच्छी होती है।

फिर बाबा ने पूछा – बच्ची, और क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा बाबा सभी जगह सेवा तो बहुत अच्छी चल रही है लेकिन सबके दिलों में एक संकल्प है कि जैसे बाबा चाहता है, ऐसे हम जल्दी-से-जल्दी बाप समान बन जाएँ। हम लक्ष्य तो ऐसा रखते हैं और जब बाबा पूछते हैं तो हाथ भी उठा लेते हैं लेकिन बीच-बीच में यह माया का खेल बाबा क्यों दिखाता है। तो हमने बाबा को कहा कि बाबा जब सबकी इच्छा है और दृढ़ संकल्प है कि हमको बाप समान बनना ही है फिर बीच-बीच में यह खेल क्यों होता है ? कभी संस्कारों का, कभी व्यर्थ संकल्पों का, कभी अभिमान का, कभी अपमान का....तो बाबा बहुत मीठा मुस्कराया। मैंने कहा बाबा मैं तो सभी का संकल्प सुना रही हूँ, मुझे कोई फ़िकर नहीं है। तो बाबा ने हमें ऐसे भाकी में लिया

और कहा बच्ची कोई फ़िकर नहीं करो। होना ही है, सबको अपनी स्टेज अनुसार बाप समान बनना ही है। मैंने कहा बाबा ऐसा क्यों होता है, चाहता तो कोई भी नहीं है कि माया आये, या कोई ऐसी बात हमारे अन्दर आये लेकिन आ जाती है, वो पीछे पता पड़ता है फिर सोचते हैं यह क्यों हो गया! तो मैंने कहा बाबा आप कहते हो माया मेरी बेटी है तो आप उस बेटी को अपने पास सम्भाल कर रखो। आप उसको छुट्टी क्यों देते हो? तो बाबा बहुत मीठा मुस्कराये और कहा बच्ची बिना पेपर के पास हो जायेंगे क्या? (ऐसा हम शुरू-शुरू में भी बाबा से पूछते थे और बाबा इतना चतुराई से जवाब देते जो हम चुप हो जाते)।

फिर बाबा ने कहा बच्ची बाबा यही देखता है कि वर्तमान समय बच्चों में 'सहनशक्ति' की बहुत आवश्यकता है। विशेष अपने प्रति अथवा संगठन के प्रति सहनशक्ति कम होने के कारण ही यह सब बातें आती हैं - चाहे अभिमान की, चाहे अपमान की, चाहे कोई भी व्यर्थ संकल्प आते हैं, उन सबका कारण सहनशक्ति की कमी है। सहनशक्ति न होने के कारण ही बाबा बच्चों का एक खेल देखता रहता है। बच्ची जानती हो वह खेल कौन-सा है? बाबा ने कहा – बच्चे बड़े चतुर हो गये हैं। अपने को बचाने के लिए जब भी कोई बात होती है तो कहते हैं - इसने ऐसा किया, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, वह ऐसा करता है इसलिए मुझे जोश आता है। वैसे जोश नहीं आता लेकिन यह आगे नहीं बढ़ता है, सहयोग नहीं देता है, यह कोई बात को समझता ही नहीं है इसलिए जोश आ जाता है। तो बाबा ने कहा कि वो तो रांग है जो कम समझता है, उसे जैसा करना चाहिए, वह करना नहीं आता है। रांग तो वो है लेकिन उसकी गलती को देखकर आप जोश करते हो तो क्या यह राइट है? जैसे कई कहते हैं - ऐसे तो हमको जोश या क्रोध नहीं आता लेकिन जब कोई झूठ बोलता है तो झूठ पर बहुत जोश आ जाता है। तो बाबा ने कहा कि बच्चे बहाना लगाने में बहुत होशियार हैं। दूसरे को फौरन दोष देंगे कि इसने ये किया तब मुझे ये व्यर्थ संकल्प आये। लेकिन कारण मैं हूँ, यह नहीं सोचते हैं। दूसरे की गलती नोट कर लेते लेकिन मेरी गलती क्या है वो नोट नहीं करते हैं। तो उसके लिए बाबा ने कहा कि सहनशक्ति की बहुत आवश्यकता है। अगर दो की बातें होती हैं, उसमें एक

भी सहनशक्ति में आ जाए तो बात खत्म। तो बाबा ने आज विशेष अटेन्शन दिलाया कि बच्चे अपनी ग़लती को ही देखें। दूसरे की कितनी भी ग़लती हो, तो भी सोचो कि मेरी गलती क्या है? अटेन्शन से अपनी चेकिंग करो। दूसरा बाबा ने कहा कि सहनशक्ति वाले को साइलेन्स बहुत अच्छी लगती है, और ज़्यादा टाइम जो बातों में चला जाता है, सहनशक्ति से, अन्तर्मुखी होने से समय बच जायेगा और साइलेन्स की शक्ति स्वत: आयेगी। साथ-साथ साइलेन्स में रहने से समाने की भी शक्ति आयेगी। तो ऐसे बाबा मुस्कराते हुए बोले कि सभी बच्चों को कहो कि अमृतवेले से लेकर यह एक ही सहनशक्ति को सामने रखो और डिटेल में नहीं जाओ। सवेरे से लेकर अपने चार्ट को बीच-बीच में चेक करो कि मेरे में सहनशक्ति है या हिल गये? सहनशक्ति को कितना प्रैक्टिकल में लाये और कहाँ-कहाँ हमारी सहनशक्ति लूज हुई? तो एक ही सहनशक्ति का पाठ पक्का कर लो, उसमें सब शक्तियाँ आ जायेंगी।

तो बाबा ने यह शिक्षा दी और कहा कि बच्चे इस बात पर अटेन्शन देंगे तो सब बातें खत्म होकर सहज ही बाप समान बन जायेंगे। फिर बाबा ने दादी जानकी को इमर्ज किया और कहा कि ''यह हिम्मत और उमंग-उत्साह की देवी है।'' फिर जानकी दादी ने बाबा को कहा बाबा दादी को भी बुलाओ, मुझे दादी के बिना मज़ा नहीं आता। तो बाबा ने दोनों दादियों को अपने बाजू में बिठाया और दोनों के सिर पर ऐसे हाथ रखा, जैसे बाबा बहुत हल्की-हल्की मसाज़ कर रहा हो। वो सीन तो बहुत अच्छा लग रहा था फिर बाबा ने कहा अच्छा बच्ची मेरे में समा जाओ। तो दोनों दादियाँ ऐसे बाबा में समा गई जो मैं देखती रही। बाबा ने कहा बच्ची तुम तो इन दोनों के बीच में हो ही। मैंने कहा बाबा हमको बीच में अच्छा लगता है। फिर बाबा ने कहा एक-एक बच्चे को मेरी तरफ से विशेष यादप्यार देना। हर एक समझे कि बाबा ने मुझे स्पेशल यादप्यार दी है। साथ-साथ हर एक के मस्तक पर विक्टरी का (विजय का) तिलक तो बाबा ने लगा ही दिया है। ऐसे बाबा ने सभी को बहुत-बहुत याद दी और हम नीचे आ गई। ओम् शान्ति।